"चरण कमल"

- "साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि । उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ।" (5-45)
- "भले दिनस भले संजोग । जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ।1। ओह बेला कउ हउ बलि जाउ । जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ रहाउ ॥ ।1। सफल मूरत सफलु ओहु घरी । जितु रसना उचरै हरि हरी ।2। सफल ओहु माथा संत नमसकारसि ।

चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ।3। कहु नानक भला मेरा करम।जितु भेटे साधू के चरन ।" (5-191)

- "संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ । गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ । आगे दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ।1। भाई रे साची सतिगुर सेव । सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ।1। रहाउ । सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ । अनदिनु सच सलाहणा सचे के गुण गाउ । सचु खाणा सचु पैनणा सचे सचा नाउ ।2। सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि । गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि । नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ।3। गुर परमेसरु एकु है सभि महि रहिआ समाइ । जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामि धिआई । नानक गुर सरणागती मरे न आवे जाई । (5-52-53)
- "मन रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ । गुरु नामु दिड़ाए रंग सिउ सतिगुर कै बलि जाउ । बिनु सतिगुर हरिनामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ।2। बिनु भागां सतिगुरु ना मिले घरि बैठिआ निकटि नित पासि । अंतरि अगिआन दुख भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि । बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुख लोहु बूडा बेड़ी पासि ।3। सतिगुर बोहिथु हरि नाव है कितु विधि चड़िआ जाइ ।

सतिगुर के भाणे जो चले विचि बोहिथ बैठा आइ । धनु धनु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ।4। (4-40)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक